REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

माध्यमिक स्तर पर हिन्दी माध्यम के छात्र छात्राओं की उनकी समग्र शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

कुलदीप कुमार[1] , डॉ. अनूप कुमार पोखरियाल[2]
[1]शोध छात्र (Ph.D.) शिक्षाशास्त्र विभाग, हिमगिरी जी विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखंड.
[2]सहायक प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, हिमगिरी जी विश्वविद्यालय,देहरादून, उत्तराखंड.

सारांश

माध्यम के रूप में प्रयुक्त किसी भाषा का विद्यार्थी की समग्र रूप में शैक्षिक उपलब्धि पर कुछ न कुछ प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत शोध कार्य में हाईस्कूल स्तर के 202 संस्थागत हिन्दी भाषी विद्यार्थियों (86 छात्र व 116 छात्राऐं) के हिन्दी भाषा (विषय के रूप में) के प्राप्तांकों के उनकी समग्र शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। क्रमशः t मान व r मान की गणना की गयी जिनका प्राप्त मान .01 स्तर पर सार्थक पाया गया। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि माध्यम के रूप में हिन्दी भाषा का प्रयोग 99 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों की समग्र शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक रूप में धनात्मक प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्द– *माध्यमिक स्तर, हिन्दी भाषा, शैक्षिक उपलब्धि, सह-सम्बन्ध.*

प्रस्तावना

भाषा, वह साधन तथा माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार, भाव तथा इच्छाओं को अभिव्यक्त करता है। परिवार में बालक जो भाषा सिखता है उसे मातृ भाषा कहते हैं। मातृ भाषा के बाद सथानीय भाषा का स्थान आता है। तदुपरान्त राष्ट्रभाषा का। हमारे देश में हिन्दी ऐसी भाषा है, जिससे कि हमारे देश की अधिकांश जनता बोलती है, समझती है व लिखती है। इसीलिए हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी है। राष्ट्रभाषा को ही राज्य भाषा भी कह दते है। यही कारण है कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में विद्यार्थी को प्राथमिक कक्षाओं से ही हिन्दी भाषा का व्याकरणीय ज्ञान दिया जाना प्रारम्भ कर दिया जाता है ताकि आगे चलकर हिन्दी भाषा को माध्यम–भाषा के रूप में विद्यार्थी अपना सके।

व्याकरणीय अशुद्धियां वाक्य–रचना अथवा वाक्य–अर्थ का भाव ही बदल देती है। उदाहरण–सरदार, असरदार होते हैं वाक्य में असरदार का प्रयोग सरदार के विलोम के रूप में नहीं किया गया हैं अपितु प्रभावी भाव से प्रयोग किया गया है। इसी तरह पूंछ व पूँछ शब्द है। एक पूंछ का अर्थ आवश्यकता अथवा महत्व हैं जबकि पूँछ पशु का प्रष्ठ अंग है। इस तरह भाषा में शाब्दिक व व्याकरणात्मक शुद्धियों की अतीव सार्थकता होती है।

यह नितान्त सत्य है कि वर्तनी की शुद्धियां, चिन्हों का अंकन एवं अन्य व्याकरणीय शुद्धियां विद्यार्थी की हिन्दी भाषा में अभिव्यक्ति को प्रभावित करने के साथ ही हिन्दी भाषा के माध्यम से विद्यार्थी की इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान आदि अन्य विषयों की उपलब्धि को प्रभावित करते है। सामान्यतः हिन्दी भाषी विद्यार्थी परीक्षा में उत्तर पुस्तिका पर हिन्दी माध्यम से प्रश्नों के उत्तर लिखता है। इसमें विद्यार्थी की हिन्दी भाषा में परिशुद्धता का स्तर महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करता है।

शोध समस्या कथन

माध्यमिक स्तर पर हिन्दी माध्यम के छात्र छात्राओं की उनकी समग्र शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

सम्बंधित साहित्य का अवलोकन

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अनेक कारकों का प्रभाव पड़ता है, जिसमें से शोधार्थी द्वारा कतिपय निम्न शोध कार्यो का वर्णन किया जा रहा है।

श्रीवास्तव (1987) ने हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी बुद्धि स्तर के साथ सह सम्बद्धता का अध्ययन किया।

पुजार एवं गॉवकर (1997) ने कक्षा 8, 9, 10 कक्षा के विद्यार्थियों पर अध्ययन करके पाया कि आत्म–सप्रत्यय का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक प्रभाव पडता है।

सुनीता एवं मैखुरी (2001) ने कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों पर अध्ययन कर पाया कि उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग व अध्ययन आदतों का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

गरवर (2006) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि अध्ययन आदतों का विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रक्रियाओ पर सार्थक प्रभाव पडता है।

बम्मन एवं क्षीरसागर (2008) ने गुलवर्ग जनपद के उचचतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के साथ धनात्मक सह सम्बन्ध पाया।

महमूंदी एवं बेटसर (2009) ने कक्षा 9 के विद्यार्थियों पर अध्ययन करके पाया कि विद्यार्थियों का गृह–समायोजन उनकी शैक्षिक–उपलब्धि के साथ सार्थक धनात्मक रूप में सहसम्बन्धित है।

तिवारी एवं नैथानी (2011) ने कक्षा 10 के 56 विद्यार्थियों पर अध्ययन करके पाया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर माता–पिता के मधुर व्यवहार एवं कम अपेक्षाओं का सार्थक धनात्मक प्रभाव पड़ता है।

त्रिपाठी एवं पन्नू (2011) ने अमृतसर जनपद के कक्षा 9 के विद्यार्थियों पर अध्ययन करने पर पाया कि विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक रूप में सार्थक प्रभाव पड़ता है।

शर्मा व शर्मा (2011) ने जनपद मण्डी (हिमाचल प्रदेश) के उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर अध्ययन करने पर पाया कि उनकी जूडिशियल थिंकिंग स्टाइल, उनकी शैक्षिक उपलब्धि को तीव्रता से बढ़ा देती है।

उपरोक्त शोध–अध्ययनों के प्राप्त परिणामों से विदित होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके बुद्धि स्तर, आत्म–प्रत्यय, समायोजन थिंकिंग स्टाइल, अध्ययन–आदतों का सार्थक रूप से धनात्मक प्रभाव पड़ता है। जब कि यह विचारणीय है कि विभिन्न विषयों की परीक्षा में हिन्दी भाषा को माध्यम बनाकर प्रश्नोत्तर लिखने वाले विद्यार्थियों की उन विषयों में उपलब्धि पर अवश्य ही प्रभाव पडता है, जो उनकी समग्र शैक्षिक उपलब्धि को निर्मित करता है, किन्तु इस सम्बन्ध में शोद्यार्थी को कोई भी शोध–अध्ययन उपलब्ध नही हो पाया। इसी कारणवश प्रस्तुत शोध सम्पन्न करने का एक प्रयास किया गया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के उदेश्यों को शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित प्रकार से निर्धारित किया गया है-

1. विद्यार्थियों की कक्षा 10 की माध्यमिक शिक्षा परिषद उ0प्र0 की परीक्षा में माध्यम के रूप में हिन्दी विषय में प्राप्त प्राप्तांकों का अध्ययन करना।
2. उपरोक्त विद्यार्थियों की कक्षा–10 की परीक्षा में प्राप्त समग्र शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों के हिन्दी विषय के प्राप्तांकों का उनकी समग्र शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाए

शोधार्थी द्वारा शोध को सुगम बनाने के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओ का निर्माण किया गया है -

1. उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों के हिन्दी विषय के प्राप्तांकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाली छात्राओं के हिन्दी विषय के प्राप्तांकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. छात्रों के हिन्दी विषय के प्राप्तांको एवं समग्र शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
4. छात्राओं के हिन्दी विषय के प्राप्तांकों एवं समग्र शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का अनुगमन किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोधकार्य सहारनपुर जनपद के अन्तर्ग संचालित राजकीय आश्रम पद्धति के माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 10 के विद्यार्थियों (सत्र 2016–17) की जनसंख्या ली गयी है, जिसमें से सहजता से उपलब्धता के आधार पर निम्नवत न्यादर्श रखा गया है।

तालिका 1

छात्र	छात्राएं	कुल विद्यार्थी
86	116	202

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद, इलाहाबाद से प्राप्त विद्यार्थियों के कक्षा 10 (सत्र 2016–17) की शैक्षिक उपलब्धि की सूची का प्रयोग किया गया और हिन्दी भाषा माध्यम के विद्यार्थियों के हिन्दी विषय में तथा उनकी समग्र शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का अंकन करके उन्हें प्रतिशत में रूपान्तरित कर लिया गया।

सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या

(अ) 60 प्रतिशत से अधिक समग्र शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों को उच्च शैक्षिक उपलब्धि तथा 50 प्रतिशत से कम समग्र शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों को निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी माना गया इनका विवरण निम्नवत है।

तालिका 2

	उच्च	मध्य	निम्न	कुल
छात्र	34	40	12	86
छात्राएं	74	35	7	116

(ब) परिकल्पना (1) व (2) का परीक्षण

तालिका 3

उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों के हिन्दी भाषा में उपलब्धि पर तुलनात्मक स्थिति

	उपलब्धि स्तर	विद्यार्थी संख्या	मध्यमान	मानक–विचलन	t–मान	सार्थकता स्तर
छात्र	उच्च	34	73.47	8.35	6.61	0.01
	निम्न	12	57.00	7.06		
df = 44 t- मान .05 सार्थकता स्तर पर = 1.98 .01 सार्थकता स्तर पर = 2.63						

तालिका 4

उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्राओं के हिन्दी भाषा में उपलब्धि पर तुलनात्मक स्थिति

	उपलब्धि स्तर	विद्यार्थी संख्या	मध्यमान	मानक–विचलन	t–मान	सार्थकता स्तर
छात्राएं	उच्च	74	72.34	7.90	3.802	0.01
	निम्न	07	62.72	6.24		
df = 79 t- मान .05 सार्थकता स्तर पर = 1.98 .01 सार्थकता स्तर पर = 2.63						

उपरोक्त तालिका संख्या 3 और 4 से ज्ञात होता है कि हिन्दी भाषा में उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले छात्रों का मध्यमान क्रमशः 73.47 व 57.00 है। जबकि छात्राओं का तत्सम्बन्धी मध्यमान क्रमशः 72.34 व 62.72 पाया गया। इनके अवलोकन से विदित होता है कि हिन्दी भाषा में उच्च उपलब्धि वाले छात्र एवं छात्राओं दोनों की समग्र शैक्षिक उपलब्धि का स्तर पर भी उच्च है। इसी तरह हिन्दी भाषा में निम्न उपलब्धि वाले छात्र एवं छात्राओं दोनों की समग्र शैक्षिक उपलब्धि भी कम पायी गयी। मध्यमानों के मध्य (उच्च एवं निम्न') स्तरों पर तुलना करने पर उनके अन्तर का t–मान ज्ञात करने पर क्रमशः 6.61 तथा 3.802 पाया गया जोकि .01 स्तर पर सार्थक है जिसके फलस्वरूप हमारी परिकल्पना 1 व 2 अधिक एवं कम समग्र शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों (छात्र अथवा छात्राए) की हिन्दी भाषा की उपलब्धि (प्राप्तांको) में कोई सार्थक अन्तर नही है, निरस्त की जाती है। अर्थात 99 प्रतिशत से अधिक, समग्र शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थी निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा हिन्दी भाषा में भी उच्च स्तर के अंक प्राप्त करते हैं। यह तथ्य छात्र एवं छात्राओं दोनों के लिए सत्य पाया गया।

(स) परिकल्पना 3 व 4 का परीक्षण

तालिका 5

छात्रों की हिन्दी भाषा में प्राप्तांकों एवं समग्र शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्य सहसम्बन्ध की तुलना

	छात्रों की संख्या	df	r	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्रों की हिन्दी भाषा में प्राप्तांक एवं समग्र शैक्षिक	46	44	+0.78	0.01	धनात्मक, सहसम्बन्ध

उपलब्धि के प्राप्तांक					
छात्रों के सन्दर्भ में df = 45 पर 'r' मान = +0.78 (जोकि .01 स्तर के r मान =0-372 से अधिक है)					

तालिका 6

छात्राओं की हिन्दी भाषा में प्राप्तांकों एवं समग्र शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्य सहसम्बन्ध की तुलना

	छात्राओं **की संख्या**	**df**	r	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्राओं की हिन्दी भाषा में प्राप्तांक एवं समग्र शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांक	81	79	+0.57	0.01	धनात्मक, सहसम्बन्ध
छात्राओं के सन्दर्भ में df = 79 पर 'r' मान = +0.57 (जोकि .01 स्तर के r मान =0-372 से अधिक है)					

उपरोक्त तालिका संख्या 5 और 6 से ज्ञात होता है कि कि 99 प्रतिशत से अधिक छात्रों /छात्राओं की हिन्दी भाषा में उपलब्धि (प्राप्तांक) एवं उनकी समग्र शैक्षिक उपलब्धि (प्राप्तांक) के मध्य सार्थक, धनात्मक, सहसम्बन्ध गुणांक (r–मान) है। इस तरह परिकल्पना 3 व 4 स्वीकृत नहीं की जा सकी।

इससे यह कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा में उपलब्ध प्राप्तांको का छात्र/छात्राओं की समग्र शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांको पर अत्यधिक धनात्मक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण के आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं –

1. माध्यम के रूप में हिन्दी भाषा में अधिक उपलब्धि के विद्यार्थियों की समग्र शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च रहती है।
2. विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उपलब्धि का उनकी समग्र शैक्षिक उपलब्धि के साथ उच्च स्तर का धनात्मक सहसम्बन्ध रहता है।

सुझाव

उपरोक्त शोध परिणामों के आधार पर शिक्षकों एवं अभिभावकों को यह सबल सुझाव दिया जाता है कि माध्यम से रूप में प्रयुक्त हिन्दी भाषा में अधिक उपलब्धि प्राप्त कराने का सार्थक प्रयास किया जाए फलस्वरूप उन विद्यार्थियों की समग्र शैक्षिक उपलब्धि में अपेक्षाकृत गुणात्मक सुधार हो सकेगा। निःसंदेह माध्यम में प्रयुक्त भाषा का विद्यार्थी की समग्र शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

Bibliography

Bamman, S., & K. Sheersagar. (2008). Self Concept and Academic Achievement among Students. *Indian Journal of Psychology and Education , 39* (1), 57-59.

Betsur, Mahmondi. (2009). Relationship between Adjustment and Academic Achievement. *Psycho- Lingua , 39* (2), 182-186.

G. Megha. (2006). Academic Achievement as Determined by their Preferred Learning Thinking Style and Study Habits. *Psycho Lingua , 36* (2), 171-177.

Goonkar, Pujar. (1997). Influence of Gender on Self Concept, Study Improvement among High and low Achieving Adolesent. *Indian Psychological Review , 49*, 38-42.

Pandey, R. (2017). *Bhasha aur Shiksha.* (Agra. Vinod Pustak Mandir, Ed.)

R. Maikhuri, Pandey. (2003). Relationship between SES and Academic Achievement of Adolesents. *Psycho-Lingua , 39* (2), 182-186.

Sharma, K., & Sharma. (2011). Relationship of Academic Achievement of Students with thinking style. *Indian Journal of Psychology and Education , 42* (2), 138-143.

Srivasta,R.K. (1987). A Correlation Study of Intelligence and Academic Achievement of High School Pupils. *The Programme of Education , 51* (6), 109-112.

Tripathi & Pannu. (2011). Interactive Infuence of Adjustment and Gender on Academic Achievement of Senior Scondary Class Students. *Pscho-Lingua , 42* (2), 143-148.

Twari Jyoti and Naithani Rekha. (2011). Impact of Parent Child Relationship on Scholastic Achievement of Adolesents. *Indian Journal of Psychology anf Education , 42* (2), 23-25.